Quick word tests

तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	आह्लाद	आह्नाद	फ्रीज	फ्रीज	मग्ज	मग्ज	हृत्स्थल	हत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्नितिक	ह्रितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्रा	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्जूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्जे	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट्	ईषत्स्पृष्ट्	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्त्य	उत्त्य	पंक्ति	पंक्ति	उत्स्रुत	उत्स्रुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्य	उत्य	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्जाम	रत्न	रत्न	दुर्लंघ्य	दुर्लंघ्य	सद्ग्रन्थ	सद्ग्रन्थ	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्ष्टांत	दर्षांत	मौके	मीके	ब्यर्थे	ब्यर्थैं	उज्ज	उज्ज	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्नाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ्रैक्चर	फ्रेक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	ह्रास	ह्रास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रून	राष्ट्रन	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	कॉफी	काँफी	रक्त	रक्त	विशाखपट्नम	विशाखपट्नम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त	वक्त्र	ट्रैन	ट्रैन	मंत्री	मंत्री	अंतर्वेशन	अंतर्वेंशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इज़ात	इज़्जत	स्रेह	स्नेह	वक्फ़	वक्फ	लड्डू	लड्डू	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्शा	रिक्शा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्ड्यां	ध्ड्यां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्प्रहक	दीन्ह्यो	दीन्ह्यो	कुरीं	कुर्री
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कट्टू	कटू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख़्त	सख़्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्ज़ी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	हूं	हूँ	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख़्म	ज़ख़म	सपत्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज़ैंय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़ख	फ़ख़	ल्याहिक	त्र्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्ग्रास	अग्ग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यृह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहत दर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दृष्कर्म सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रेम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date:Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date:Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेंट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मृविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेंट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेंट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाडब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में डजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्य1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्य्1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यु 1 दनिया का पहला वाटरप्रुफ और शॉकप्रुफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मुविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंटास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीड़ी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालों को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निदयों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करैं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निदयों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करैं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झूँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

दुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं।।

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं।।

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हिरयाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वहीं झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

Consonant spacing
पपकपवपवकवव
पपखपवपवखवव
पपगपवपवगवव
पपघपवपवघवव
पपङपवपवङवव
पपचपवपवचवव
पपछपवपवछवव
पपजपवपवजवव
पपझपवपवझवव
पपञपवपवञवव
पपटपवपवटवव
पपठपवपवठवव
पपडपवपवडवव
पपढपवपवढवव
पपणपवपवणवव
पपतपवपवतवव
पपथपवपवथवव
पपदपवपवदवव
पपधपवपवधवव
पपनपवपवनवव
पपपपवपवपवव
पपफपवपवफवव
पपबपवपवबवव
पपभपवपवभवव
पपमपवपवमवव
पपयपवपवयवव
पपरपवपवरवव
पपलपवपवलवव
पपळपवपवळवव
पपवपवपववव
पपशपवपवशवव

पपषपवपवषवव

पपसपवपवसवव पपहपवपवहवव पपकपवपवक्रवव पपखपवपवख़वव पपग़पवपवग़वव पपज़पवपवज़वव पपड़पवपवड़वव पपढ़पवपवढ़वव पपफ़पवपवढ़वव पपफ़पवपवक्रवव पपअपवपवयव पपअपवपवयवव पपअपवपवयवव पपक्षपवपवयवव पपक्षपवपवस्नवव

Vowel spacing

पपअपवपवअवव पपअपवपवअवव पपॲपवपवॲवव पपइपवपवइवव पपर्डपवपवर्डवव पपउपवपवउवव पपऊपवपवऊवव पपएपवपवएवव पपऐपवपवऐवव पपऍपवपवऍवव पपऎपवपवऎवव पपआपवपवआवव पपओपवपवओवव पपऔपवपवऔवव पपऋपवपवऋवव पपऋपवपवऋवव पपल्पवपवल्वव पपॡपवपवॡवव

Rakar spacing

पपक्रपवपवक्रवव

पपख्रपवपवख्रवव

पपग्रपवपवग्रवव

पपघ्रपवपवघ्रवव

पपङ्गपवपवङ्गवव पपच्चपवपवच्चवव पपछूपवपवछूवव पपज्रपवपवज्रवव पपझ्रपवपवझ्रवव पपञ्जपवपवञ्जवव पपट्रपवपवट्रवव पपठूपवपवठूवव पपड्रपवपवड्रवव पपढ्रपवपवढूवव पपण्रपवपवण्रवव **ччячачаяаа** पपथ्रपवपवथ्रवव पपद्रपवपवद्रवव पपध्रपवपवध्रवव पपन्नपवपवन्नवव **पपप्रपवपवप्रवव** पपफ्रपवपवफ्रवव पपब्रपवपवब्रवव पपभ्रपवपवभ्रवव पपम्रपवपवम्रवव पपग्रपवपवग्रवव पपरूपवपवरूवव पपल्लपवपवल्लवव पपव्रपवपवव्रवव पपश्रपवपवश्रवव **ччячачаяаа** पपस्रपवपवस्रवव

पपह्रपवपवह्नवव पपळ्रपवपवळ्रवव पपक्षपवपवक्षवव पपञ्जपवपवञ्जवव

Conjunct spacing

पपक्तपवपवक्तवव पपङ्गपवपवङ्गवव पपङ्गपवपवङ्गवव पपड्यपवपवड्यवव पपज्जपवपवज्जवव पपज्थपवपवज्थवव पपज्यपवपवज्यवव पपज्सपवपवज्सवव पपछ्यपवपवछ्यवव पपट्यपवपवट्यवव पपठ्यपवपवठ्यवव पपड्यपवपवड्यवव पपढ्यपवपवढ्यवव पपट्टपवपवट्टवव पपट्रपवपवट्रवव पपठ्रपवपवठ्ठवव पपड्डपवपवडूवव पपडूपवपवडूवव पपढूपवपवढूवव पपत्तपवपवत्तवव पपत्खपवपवत्खवव पपत्थपवपवत्थवव पपत्नपवपवत्नवव पपत्सपवपवत्सवव पपत्यपवपवत्यवव पपद्धपवपवद्भवव पपद्गपवपवद्गवव

पपद्धपवपवद्भवव पपद्धपवपवद्भवव पपद्वपवपवद्ववव पपद्धपवपवद्धवव पपद्धापवपवद्धावव पपद्मपवपवद्मवव पपद्यपवपवद्यवव पपद्दपवपवद्दवव पपश्मपवपवश्मवव पपन्मपवपवन्मवव पपल्जपवपवल्जवव पपल्थपवपवल्थवव पपत्भपवपवत्भवव पपल्मपवपवल्मवव पपल्यपवपवल्यवव पपश्रपवपवश्रवव पपश्वपवपवश्ववव पपश्लपवपवश्लवव पपष्टपवपवष्टवव पपष्टपवपवष्टवव पपष्ठपवपवष्ठवव पपष्ठुपवपवष्ठुवव पपह्नपवपवह्नवव पपह्नपवपवह्नवव पपह्मपवपवह्मवव पपह्यपवपवह्यवव पपह्लपवपवह्लवव पपह्वपवपवह्नवव

U/Uu variant spacing	पपपॉपपरॉपपकॉपप	Numeral spacing	पपन, पवन.	पपए, पवए.	पपद्ग, पवद्ग.
पपहुपवपवहुवव	पपपॉपपरॉपपकॉपप	००००१०१०११	पपप, पवप.	पपऐ, पवऐ.	पपद्घ, पवद्घ.
पपहूपवपवहूवव	पपपौपपरौपपकौपप	००१०१०१११	पपफ, पवफ.	पपऍ, पवऍ.	पपद्भ, पवद्भ.
•	पपपोंपपरोंपपकोंपप	००२०१०१२११	पपब, पवब.	पपऎ, पवऎ.	पपद्व, पवद्व.
पपहपवपवहवव	पपर्पीपपर्रीपपर्कीपप		पपभ, पवभ.	पपआ, पवआ.	पपद्ध, पवद्ध.
पपहृपवपवहृवव	पपपोपपरोपपकोपप	0030808388	पपम, पवम.	पपओ, पवओ.	पपद्द, पवद्द.
पपह्रुपवपवह्रुवव	पपपोंपपरोंपपकोंपप	००४०१०१४११	पपय, पवय.	पपऔ, पवऔ.	पपष्ट, पवष्ट.
पपहूपवपवहूवव	पपपॉंपपरॉंपपर्कॉंपप	००५०१०१५११	पपर, पवर.	पपऋ, पवऋ.	पपष्ट्र, पवष्ट्र.
पपरुपवपवरुवव	पपपीपपरीपपकीपप	००६०१०१६११	पपल, पवल.	पपऋ, पवऋ.	पपष्ठ, पवष्ठ.
पपरूपवपवरूवव	पपपौंपपरौंपपकौंपप	००७०१०१७११	पपळ, पवळ.	पपल, पवल.	पपष्ठ्र, पवष्ठ्र.
पपदुपवपवदुवव	पपपौंपपरोंपपकोंपप	००८०१०१८११	पपव, पवव.	पपॡ, पवॡ.	पपह्ल, पवह्ल.
पपदूपवपवदूवव		००९०१०१९११	पपश, पवश.		पपह्न, पवह्न.
पपदृपवपवदृवव	पपपुपपरुपपकुपप		पपष, पवष.		पपह्न, पवह्न.
	पपपूपपरूपपकूपप	Letter-punct spacing	पपस, पवस.	पपङ्र, पवङ्र.	पपह्न, पवह्न.
Vowel sign spacing		गाक गतक		पपछ्र, पवछ्र.	11(a, 14(a.
पपपंपपरंपपकंपप	पपपृपपरृपपकृपप	पपक, पवक.	पपह, पवह.	पपट्र, पवट्र.	गगर गतर
पपपॅपपरॅपपकॅपप	पपपृपपरॄपपकृपप	पपख, पवख.	पपक, पवक.	पपठ्र, पवठ्र.	पपहु, पवहु.
पपपॅपपरॅपपकॅपप	पपपूपपरूपपकूपप 	पपग, पवग.	पपख, पवख़.	पपड्र, पवड्र.	पपहू, पवहू.
पपपँपपरँपपकँपप	पपपूपपरूपपकूपप	पपघ, पवघ.	पपग़, पवग़.	पपढू, पवढू.	पपह, पवह.
पपपॆपपरॆपपकॆपप		पपङ, पवङ.	पपज़, पवज़.	पपद्र, पवद्र.	पपह्न, पवहू.
पपपेंपपरेंपपकेंपप	पपर्पपपर्रपपर्कपप	पपच, पवच.	पपड़, पवड़.	पपर्, पवरू.	पपहु, पवहु.
पपर्पेपपर्रेपपर्केपप	पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप	पपछ, पवछ.	पपढ़, पवढ़.	पपह्न, पवह्न.	पपहू, पवहू.
	पपर्पपपर्रपपर्कपप	पपज, पवज.	पपफ़, पवफ़.	पपळू, पवळू.	पपरु, पवरु.
पपपेपपरेपपकेपप ``	पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप	पपझ, पवझ.	पपय़, पवय़.	1192, 1192.	पपरू, पवरू.
पपपेंपपरेंपपकेंपप	पपर्पेंपपर्रेंपपर्केंपप	पपञ, पवञ.	पपक्ष, पवक्ष.	गान गतन	पपदु, पवदु.
पपर्पेपपर्रेपपर्केपप	पपपॅंपपरॅंपपकॅंपप	पपट, पवट.	पपज्ञ, पवज्ञ.	पपक्त, पवक्त.	पपदू, पवदू.
पपपैपपरैपपकैपप	पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप	पपठ, पवठ.		पपङ्ग, पवङ्ग.	पपदृं, पवदृं.
पपपैंपपरैंपपकैंपप	पपपॅंपपरॅंपपकॅंपप	पपड, पवड.	पपअ, पवअ.	पपङ्ग, पवङ्ग.	
पपर्पेपपर्रेपपर्केपप	पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप	पपढ, पवढ.	पपऄ, पवऄ.	पपट्ट, पवट्ट.	-
	पपपेँपपरेँपपकेँपप	पपणं, पवण.	पपॲ, पवॲ.	पपट्ठ, पवट्ठ.	पपक; पवक:
पपपापपरापपकापप		पपत, पवत.	पपइ, पवइ.	पपठ्ठ, पवठ्ठ.	पपखं; पवखः
पपपिपपरिपपकिपप	पपपऽपवपववऽवव	पपथ, पवथ.	पपई, पवई.	पपड्ढ, पवड्ढ.	पपग; पवग:
पपपीपपरीपपकीपप	पप?पवपव?वव	पपद, पवद.	पपउ, पवउ.	पपड्ड, पवड्ड.	पपघ; पवघ:
पपपींपपरींपपकींपप	पपपःपवपववःवव	पपध, पवध.	पपऊ, पवऊ.	पपढ्ढ, पवढ्ढ.	पपङ; पवङ:
पपपींपपरींपपकींपप	17779799199	774, 744.	1701, 1701.	पपद्ध, पवद्ध.	115, 145.
·					

पपच; पवच:	पपड़; पवड़:	पपरू; पवरू:	पपहु; पवहु:	पपम। पवमः	पपओ। पवओः	पपद्द। पवद्दः
पपछ; पवछ:	पपढ़; पवढ़:	पपह्र; पवह्र:	पपहूँ; पवहूँ:	पपय। पवयः	पपऔ। पवऔः	पपष्ट। पवष्टः
पपज; पवज:	पपफ़; पवफ़:	पपळ्र; पवळ्र:	पपरुं; पवरुं:	पपर। पवरः	पपऋ। पवऋः	पपष्ट्र। पवष्ट्रः
पपझ; पवझ:	पपय़; पवय़:		पपरू; पवरू:	पपल। पवलः	पपऋ। पवऋः	पपष्ठ। पवष्ठः
पपञ; पवञ:	पपक्ष; पवक्ष:	पपक्त; पवक्त:	पपदु; पवदु:	पपळ। पवळः	पपल्। पवलः	पपष्ठ्र। पवष्ठः
पपट; पवट:	पपज्ञ; पवज्ञ:	पपङ्ग; पवङ्ग:	पपदूः पवदूः	पपव। पववः	पपॡ। पवॡः	पपह्न। पवह्नः
पपठ; पवठ:		पपङ्ग; पवङ्ग:	पपदृं; पवदृः	पपश। पवशः		पपह्न। पवह्नः
पपड; पवड:	पपअ; पवअ:	पपट्ट; पवट्ट:		पपष। पवषः	गाउँ। गुरुक	पपह्न। पवह्नः
पपढ; पवढ:	पपऄ; पवऄ:	पपट्ठ; पवट्ठ:	-	पपस। पवसः	पपङ्ग। पवङ्ग	पपह्न। पवह्नः
पपण; पवण:	पपॲ; पवॲ:	पपठ्ठ; पवठ्ठ:	पपक। पवकः	पपह। पवहः	पपछ्। पवछः	
पपत; पवत:	पपइ; पवइ:	पपड्ढः; पवड्टः	पपख। पवखः	पपक्र। पवक्रः	पपट्र। पवट्रः	पपहु। पवहुः
पपथ; पवथ:	पपई; पवई:	पपड्डु; पवड्डु:	पपग। पवगः	पपख़। पवख़ः	पपठ्र। पवठ्रः	पपहू। पवहूः
पपद; पवद:	पपउ; पवउ:	पपढ्ढ; पवढ्ढ:	पपघ। पवघः	पपग्र। पवग्रः	पपड्र। पवड्रः गणद्र। गवदः	पपह्। पवहः
पपध; पवध:	पपऊ; पवऊ:	पपद्ध; पवद्धः	पपङ। पवङः	पपज़। पवज़ः	पपद्र। पवद्रः गणद्र। प्रवटः	पपहॄ। पवहॄः
पपन; पवन:	पपए; पवए:	पपद्ग; पवद्गः	पपच। पवचः	पपड़। पवड़ः	पपद्र। पवद्रः	पपहु। पवहुः
पपप; पवप:	पपऐ; पवऐ:	पपद्ध; पवद्धः	पपछ। पवछः	पपढ़। पवढ़ः	पपर्। पवरः	पपहू। पवहूः
पपफ; पवफ:	पपऍ; पवऍ:	पपद्भः पवद्भः	पपज। पवजः	पपफ़। पवफ़ः	पपह्न। पवहः	पपरु। पवरुः
पपब; पवब:	पपऎ; पवऎ:	पपद्व; पवद्व:	पपझ। पवझः	पपय्र। पवयः	पपळ्र। पवळ्रः	पपरू। पवरूः
पपभ; पवभ:	पपआ; पवआ:	पपद्ध; पवद्धः	पपञ। पवञः	पपक्ष। पवक्षः	पपक्त। पवक्तः	पपदु। पवदुः
पपम; पवम:	पपओ; पवओ:	पपद्द; पवद्दः	पपट। पवटः	पपज्ञ। पवज्ञः		पपदू। पवदूः
पपय; पवय:	पपऔ; पवऔ:	पपष्ट; पवष्ट:	पपठ। पवठः		पपङ्ग। पवङ्गः	पपदृ। पवदृः
पपर; पवर:	पपऋ; पवऋ:	पपष्ट्र; पवष्ट्र:	पपड। पवडः	पपअ। पवअः	पपङ्ग। पवङ्गः गगद्र। प्रवटः	
पपल; पवल:	पपऋ; पवऋ:	पपष्ठ; पवष्ठ:	पपढ। पवढः	पपऄ। पवऄः	पपट्ट। पवटः	-
पपळ; पवळ:	पपलः; पवलः:	पपष्ट्र; पवष्ट्र:	पपण। पवणः	पपॲ। पवॲः	पपट्ठ। पवटुः	पपक! पवक?
पपव; पवव:	पपॡ; पवॡ:	पपह्न; पवह्नः	पपत। पवतः	पपइ। पवइः	पपठ्ठ। पवठुः गगद्र। पतदः	पपख! पवख?
पपश; पवश:		पपह्न; पवह्न:	पपथ। पवथः	पपई। पवईः	पपड्ढ पवड्ढः गणद्र। प्रवटः	पपग! पवग?
पपषः पवषः	पपङ्र; पवङ्र:	पपह्न; पवह्न:	पपद। पवदः	पपउ। पवउः	पपड्ड पवड्डः पपद्ध। पतदः	पपघ! पवघ?
पपस; पवस:	पपछ्; पवछ्र:	पपह्न; पवह्न:	पपध। पवधः	पपऊ। पवऊः	पपढ्ढ। पवढ्ढः पपद्ध। पवद्धः	पपङ! पवङ?
पपह; पवह:	पपट्र; पवट्र:		पपन। पवनः	पपए। पवएः	पपद्ग। पवद्गः	पपच! पवच?
पपकः; पवकः	पपठ्र; पवठ्र:	पपहु; पवहु:	पपप। पवपः	पपऐ। पवऐः	पपद्ध। पवद्धः	पपछ! पवछ?
पपख़; पवख़:	पपड्र; पवड्र:	पपहू; पवहू:	पपफ। पवफः	पपऍ। पवऍः	पपद्भ। पवद्भः	पपज! पवज?
पपग़; पवग़:	पपढ़; पवढ़:	पपहः; पवहः	पपब। पवबः	पपऎ। पवऎः	पपद्व। पवद्वः	पपझ! पवझ?
पपज़; पवज़:	पपद्र; पवद्र:	पपह्; पवहूः	पपभ। पवभः	पपआ। पवआः	पपद्ध। पवद्धः	पपञ! पवञ?
	יארר יארי				1361 136.	

पपट! पवट?	पपज्ञ! पवज्ञ?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपदू! पवदू?	पपव-वपव	पपॡ-ॡपव	पपह्ल-ह्लपव
पपठ! पवठ?		पपङ्ग! पवङ्ग?	पपदृ! पवदृ?	पपश-शपव		पपह्न-ह्नपव
पपड! पवड?	पपअ! पवअ?	पपट्ट! पवट्ट?		पपष-षपव	पपङ्र-ङ्रपव	पपह्ल-ह्लपव
पपढ! पवढ?	पपऄ! पवऄ?	पपट्ठ! पवट्ठ?	-	पपस-सपव	पपछ्-छ्रपव	पपह्न-ह्नपव
पपण! पवण?	पपॲ! पवॲ?	पपठ्ठ! पवठ्ठ?	पपक-कपव	पपह-हपव		
पपत! पवत?	पपइ! पवइ?	पपड्टु! पवड्ट?	पपख-खपव	पपक़-क़पव	पपट्र-ट्रपव	पपहु–हुपव
पपथ! पवथ?	पपई! पवई?	पपड्डु! पवड्डु?	पपग-गपव	पपख़-ख़पव	पपठू-ठ्रपव गगट-ट्रान	पपहू–हूपव
पपद! पवद?	पपउ! पवउ?	पपढ्ढ! पवढ्ढ?	पपघ-घपव	पपग्र-ग़पव	पपड्र-ड्रपव गगद-ट्राप्ट	पपह्र-हृपव
पपध! पवध?	पपऊ! पवऊ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपङ-ङपव	पपज़-ज़पव	पपद्र-द्रपव	पपह्-हृपव
पपन! पवन?	पपए! पवए?	पपद्ग! पवद्ग?	पपच-चपव	पपड़-ड़पव	पपद्र-द्रपव	पपह्र–ह्रुपव
पपप! पवप?	पपऐ! पवऐ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपछ-छपव	पपढ़-ढ़पव	पपर्-रूपव	पपहूँ-हूँपव
पपफ! पवफ?	पपऍ! पवऍ?	पपद्भ! पवद्भ?	पपज-जपव	पपफ़-फ़पव	पपह्र-ह्रपव	पपरु-रुपव
पपब! पवब?	पपऎ! पवऎ?	पपद्व! पवद्व?	पपझ-झपव	पपय़-य़पव	पपळू-ळूपव	पपरू-रूपव
पपभ! पवभ?	पपआ! पवआ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपञ-ञपव	पपक्ष-क्षपव		पपदु-दुपव
पपम! पवम?	पपओ! पवओ?	पपद्। पवद्द?	पपट-टपव	पपज्ञ-ज्ञपव	पपक्त-क्तपव	पपदू-दूपव
पपय! पवय?	पपऔ! पवऔ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपठ-ठपव		पपङ्ग-ङ्गपव	पपदृ-दृपव
पपर! पवर?	पपऋ! पवऋ?	पपष्ट्र! पवष्ट्र?	पपड-डपव	पपअ-अपव	पपङ्ग-ङ्गपव	
पपल! पवल?	पपऋ! पवऋ?	पपष्ठ! पवष्ठ?	पपढ-ढपव	पपऄ-ऄपव	पपट्ट-ट्टपव	-
पपळ! पवळ?	पपल्! पवल्?	पपष्ट्र! पवष्ट्र?	पपण-णपव	पपॲ-ॲपव	पपट्ठ-ट्ठपव	"कपवपक"
पपव! पवव?	पपॡ! पवॡ?	पपह्न! पवह्न?	पपत-तपव	पपइ-इपव	पपठु-ठुपव	"खपवपख"
पपश! पवश?		पपह्नं! पवह्नं?	पपथ-थपव	पपई-ईपव	पपड्ट-ड्टपव	"गपवपग"
पपष! पवष?		पपह्नं! पवह्नं?	पपद-दपव	पपउ-उपव	पपड्ड-ड्डपव	"घपवपघ"
पपस! पवस?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपह्नं! पवह्नं?	पपध-धपव	पपऊ-ऊपव	पपढ्ढ-ढ्ढपव	"ङपवपङ"
पपह! पवह?	पपछ्र! पवछ्र?	• •	पपन-नपव	पपए-एपव	पपद्ध-द्धपव	"चपवपच"
पपक़! पवक़?	पपट्र! पवट्र?	पपहु! पवहु?	पपप-पपव	पपऐ-ऐपव	पपद्ग-द्गपव	"छपवपछ"
पपख़! पवख़?	पपठ्र! पवठ्र?	पपहूं! पवहूं?	पपफ-फपव	पपऍ-ऍवव	पपद्ध-द्वपव	"जपवपज"
पपग़! पवग़?	पपड्र! पवड्र?	पपहृं! पवहृं?	पपब-बपव	पपऎ-ऎपव	पपद्भ-द्भपव	"झपवपझ"
पपज़! पवज़?	पपढ्र! पवढ्र?	पपहूं! पवहूं?	पपभ-भपव	पपआ-आपव	पपद्व-द्वपव	"ञपवपञ"
पपड़! पवड़?	पपद्र! पवद्र?	पपहुँ! पवहुँ?	पपम-मपव	पपओ-ओपव	पपद्ध-द्धपव	"टपवपट"
पपढ़! पवढ़?	पपर्! पवर्?	पपहूं! पवहूं?	पपय-यपव	पपऔ-औपव	पपद्द-द्दपव	"ठपवपठ"
पपफ़! पवफ़?	पपह्न! पवह्न?	पपरुं! पवरुं?	पपर-रपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ट-ष्टपव	"डपवपड"
पपय़! पवय़?	पपळ्र! पवळ्र?	पपरू! पवरू?	पपल-लपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ट्र-ष्ट्रपव	"ढपवपढ"
पपक्ष! पवक्ष?		पपदु! पवदु?	पपळ-ळपव	पपल-लपव	पपष्ठ-ष्ठपव	"णपवपण"
	पपक्त! पवक्त?	5 5			पपष्ट्र-ष्ट्रपव	

"तपवपत"	"इपवपइ"	"ड्रुपवपड्र"	Num-punct spacing	li Vowel sign - base
"थपवपथ"	"ईपवपई"	"डुपवपड्ड"	पवप ₹१०१ वपव	पपकिपपकिंपपर्किपप
"दपवपद"	"उपवपउ"	"ढ्रुपवपढ्ढ"	पवप ₹२०१ वपव	पपखिपपखिंपपर्खिपप
"धपवपध"	"ऊपवपऊ"	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹३०१ वपव	
"नपवपन"	"एपवपए"	"द्गपवपद्ग"	पवप ₹४०१ वपव	पपगिपपगिंपपर्गिपप
"पपवपप"	"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹५०१ वपव	पपघिपपघिंपपर्घिपप
"फपवपफ"	"ऍपवपऍवव	"द्भपवपद्भ"	पवप ₹६०१ वपव	पपङिपपङिंपपर्ङिपप
"बपवपब"	"ऎपवपऎ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹७०१ वपव	पपचिपपचिंपपर्चिपप
"भपवपभ"	"आपवपआ"	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹८०१ वपव	पपछिपपछिंपपर्छिपप
"मपवपम"	"ओपवपओ"	"द्दपवपद्द"	पवप ₹९०१ वपव	पपजिपपजिंपपर्जिपप
"यपवपय"	"ओपवपओ"	"ष्टपवपष्ट"	747 ()0 (474	पपझिपपझिंपपर्झिपप
"रपवपर"	"ऋपवपऋ"	"ष्ट्रपवपष्ट्र"	०००,०१०,०११	पपञिपपञिंपपर्ञिपप
"लपवपल"	"ऋपवपऋ"	"ष्ठपवपष्ठ"	008,080,888	
"ळपवपळ"	"लपवपल"	"ष्ठ्रपवपष्ठ्र"	007,080,788	पपटिपपटिंपपर्टिपप
"वपवपव"	"ॡपवपॡ"	"ह्रपवपह्न"	003,080,388	पपठिपपठिंपपर्ठिपप
"शपवपश"		"ह्नपवपह्न"	००४,०१०,४११	पपडिपपडिंपपर्डिपप
"षपवपष"	"ङ्रपवपङ्र"	"ह्रपवपह्न"	००५,०१०,५११	पपढिपपढिंपपर्ढिपप
"सपवपस"	"छ्रपवपछ्र"	"ह्रपवपह्न"	००६,०१०,६११	पपणिपपणिंपपर्णिपप
"हपवपह"	"ट्रपवपट्र"		006,080,688	पपतिपपतिंपपर्तिपप
"क़पवपक़"	"ठ्रपवपठ्र"	"हुपवपहु"	००८,०१०,८११	पपथिपपथिंपपर्थिपप
"ख़पवपख़"	"ड्रपवपड्र"	"हूपवपहू"	००९,०१०,९११	
"ग़पवपग़"	"ढ्रपवपढ्र"	"ह्रपवपह्र"		पपदिपपदिंपपर्दिपप
"ज़पवपज़"	"द्रपवपद्र"	"हृपवपहृ"	000.080.088	पपधिपपधिंपपर्धिपप
"ड़पवपड़"	"रूपवपरू"	"ह्रुपवपह्रु"	008.080.888	पपनिपपनिंपपर्निपप
"ढ़पवपढ़"	"ह्रपवपह्र"	"हूपवपहू"	007.080.788	पपपिपपपिंपपर्पिपप
"फ़पवपफ़"	"ळ्रपवपळ्र"	"रुपवपरु"	003.080.388	पपफिपपफिंपपर्फिपप
"य़पवपय़"		"रूपवपरू"	00%.080.888	पपबिपपबिंपपर्बिपप
"क्षपवपक्ष"	"क्तपवपक्त"	"दुपवपदु"	००५.०१०.५११	पपभिपपभिंपपर्भिपप
"ज्ञपवपज्ञ"	"ङ्गपवपङ्ग"	"दूपवपदू"	००६.०१०.६११	पपमिपपमिपपर्मिपप
	"ङ्गपवपङ्ग"	"दृपवपदृ"	००७.०१०.७११	पपयिपपयिंपपर्यिपप
"अपवपअ"	"ट्टपवपट्ट"		००८.०१०.८११	
"ऄपवपऄ"	"हुपवपहु"		009.080.988	पपरिपपरिंपपरिंपप
"ॲपवपॲ"	"ठुपवपठु"		11- 1-111	पपलिपपलिंपपर्लिपप

पपळिपपळिंपपळिंपप पपविपपविंपपर्विपप पपशिपपशिंपपर्शिपप पपषिपपषिंपपर्षिपप पपसिपपसिंपपर्सिपप पपहिपपहिंपपर्हिपप पपक्षिपपक्षिंपपर्क्षिपप पपझिपपझिंपपर्झिपप

li Vowel sign	पपर्क्सिपप	पपर्ख्यिपप	पपिर्घ्णपप	पपर्च्टिपप	पपर्ज्यिपप	पपर्ठीपप	पपर्लिपप
clusters	पपर्क्हिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्तिपप	पपर्च्छिपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्ळिपप	पपर्लिपप
पपर्क्किपप	पपर्क्ळिपप	पपर्ग्किपप	पपर्घ्दिपप	पपर्च्हिपप	पपर्ज्लिपप	पपर्वठ्यपप	पपर्त्यिपप
पपर्क्खिपप	पपक्किर्यपप	पपर्गिपप	पपर्घ्निपप	पपर्च्छिपप	पपर्ज्विपप	पपर्ड्डिपप	पपर्त्रिपप
पपर्क्गिपप	पपर्क्त्रिपप	पपर्ग्जिपप	पपर्घ्बिपप	पपर्च्णिपप	पपर्झ्किपप	पपर्ड्डिपप	पपर्लिपप
पपर्क्चिपप	पपर्क्त्यिपप	पपर्ग्णिपप	पपर्घ्मिपप	पपर्च्तिपप	पपर्झ्गिपप	पपर्ड्रिपप	पपर्त्विपप
पपर्क्छिपप	पपर्क्त्विपप	पपर्ग्तिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्च्थिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्ड्ड्यिपप	पपर्ल्सिपप
पपर्क्जिपप	पपर्क्यिपप	पपर्ग्दिपप	पपर्च्रिपप	पपर्च्दिपप	पपर्झिपप	पपर्ढ्विपप	पपर्क्यिपप
पपर्क्झिपप	पपक्स्टिपप	पपर्ग्धिपप	पपर्घ्लिपप	पपर्च्धिपप	पपर्झ्तिपप	पपर्ढ्वीपप	पपर्क्रिपप
पपर्क्टिपप	पपक्स्डिपप	पपर्ग्निपप	पपर्घ्विपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्झ्निपप	पपर्द्विपप	पपर्स्सिपप
पपर्क्ठिपप	पपक्स्तिपप	पपर्ग्बिपप	पपर्घ्सिपप	पपर्च्यिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्त्खिपप
पपर्क्डिपप	पपक्स्पिपप	पपर्ग्भिपप	पपघ्ल्यिपप	पपर्च्चिपप	पपर्झिपप	पपर्व्ह्यिपप	पपर्ख्रिपप
पपर्क्टिपप	पपक्स्प्रिपप	पपर्ग्मिपप	पपर्ङ्किपप	पपर्च्लिपप	पपर्झ्लिपप	पपर्ण्टिपप	पपर्ख्रिपप
पपर्क्णिपप	पपर्क्प्रिपप	पपर्ग्यिपप	पपङ्र्कीपप	पपर्च्विपप	पपर्झ्विपप	पपर्र्टीपप	पपर्त्यिपप
पपर्क्तिपप	पपक्स्प्लंपप	पपर्ग्रिपप	पपङ्खिपप	पपर्च्सिपप	पपर्झिपप	पपर्ण्ठिपप	पपर्ल्पिपप
पपर्क्थिपप	पपर्ख्खिपप	पपर्ग्लिपप	पपङ्खींपप	पपर्च्यिपप	पपर्ञ्चिपप	पपर्ण्डिपप	पपर्त्प्लिपप
पपर्क्दिपप	पपर्ख्टिपप	पपर्ग्विपप	पपर्ङ्गिपप	पपर्च्मिपप	पपर्ञ्जिपप	पपर्ण्डिपप	पपर्त्म्यिपप
पपर्क्निपप	पपर्ख्विपप	पपर्ग्सिपप	पपर्झीपप	पपर्च्यिपप	पपर्ञ्शिपप	पपर्णिपप	पपर्त्स्निपप
पपर्क्पिपप	पपर्ख्णिपप	पपर्ग्धिपप	पपर्ङ्घिपप	पपर्छ्यिपप	पपर्ञ्चिपप	पपर्ण्तिपप	पपर्त्स्यिपप
पपर्क्फिपप	पपर्ख्तिपप	पपग्ध्विपप	पपङ्र्घीपप	पपर्छ्रिपप	पपर्ञ्जियपप	पपर्ण्यिपप	पपर्स्विपप
पपर्क्बिपप	पपर्ख्दिपप	पपग्र्निपप	पपर्ङ्चिपप	पपर्छ्विपप	पपर्ट्टिपप	पपर्ण्रिपप	पपत्स्न्यंपप
पपर्क्भिपप	पपर्ख्निपप	पपग्भिर्यपप	पपर्ङ्क्षपप	पपर्ज्किपप	पपर्ट्टीपप	पपर्ण्विपप	पपर्थ्किपप
पपर्क्मिपप	पपर्खिपप	पपर्ग्रिपप	पपङ्क्रींपप	पपर्ज्जिपप	पपर्हिपप	पपर्त्किपप	पपर्थ्यिपप
पपर्क्यिपप	पपर्ख्मिपप	पपग्म्यिपप	पपर्ङ्क्रिपप	पपर्ज्झिपप	पपर्ट्टीपप	पपर्त्खिपप	पपर्थ्मिपप
पपर्क्रिपप	पपर्ख्यिपप	पपग्ल्यिपप	पपर्झिपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्ट्यिपप	पपर्त्तिपप	पपर्थ्यिपप
पपर्क्लिपप	पपर्ख्रिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्ङ्यिपप	पपर्ज्तिपप	पपर्ट्रिपप	पपर्स्थिपप	पपर्थ्रिपप
पपर्क्विपप	पपर्ख्लिपप	पपर्घ्जिपप	पपर्ङ्रिपप	पपर्ज्दिपप	पपर्ट्रीपप	पपर्लिपप	पपर्थ्लिपप
पपर्क्शिपप	पपर्ख्विपप	पपर्घ्टिपप	पपर्च्किपप	पपर्ज्निपप	पपर्ट्विपप	पपर्त्पिपप	पपर्थ्विपप
पपर्क्षिपप	पपर्ख्शिपप	पपर्घ्ठिपप	पपर्च्खिपप	पपर्ज्बिपप	पपट्वींपप	पपर्त्फिपप	पपर्थ्सिपप
	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्डिपप	पपर्च्चिपप	पपर्ज्मिपप	पपर्हिपप	पपर्ल्बिपप	पपर्द्गिपप

Khula - Bold v. 1.001 December 3, 2014 9:26 PM

पपर्हम्यिपप

पपर्ह्मिपप पपर्ह्मिपप पपर्ह्मिपप पपर्ह्मिपप पपर्ह्मिपप

पपर्ह्विपप पपर्ल्थिपप पपर्ल्पिपप पपर्ल्विपप पपर्स्थिपप पपर्स्थिपप पपर्स्विपप पपर्स्विपप

पपर्द्धिपप	पपर्न्तिपप	पपर्म्थिपप	पपर्फ्टिपप	पपम्म्यिपप	पपर्ल्भिपप	पपर्स्जिपप
पपर्द्दिपप	पपर्न्थिपप	पपर्म्बिपप	पपर्फ्तिपप	पपर्म्प्रिपप	पपर्ल्मिपप	पपर्स्टिपप
पपर्द्धिपप	पपर्न्दिपप	पपर्म्प्रिपप	पपर्प्दिपप	पपर्म्ब्यिपप	पपर्ल्यिपप	पपर्स्ठिपप
पपर्द्धिपप	पपर्न्धिपप	पपन्स्म्यपप	पपर्म्निपप	पपर्म्ब्रिपप	पपर्ल्लिपप	पपर्स्डिपप
पपर्द्भिपप	पपर्न्निपप	पपर्प्किपप	पपर्फिपप	पपर्म्थिपप	पपर्ल्विपप	पपर्स्हिपप
पपर्द्मिपप	पपर्न्पिपप	पपर्झिपप	पपर्म्मिपप	पपर्म्भिपप	पपर्ल्सिपप	पपर्स्तिपप
पपर्खिपप	पपर्म्भिपप	पपर्प्टिपप	पपर्प्यिपप	पपम्भिर्वपप	पपर्ल्हिपप	पपर्स्थिपप
पपर्द्रिपप	पपर्न्बिपप	पपर्चिपप	पपर्फ्रिपप	पपर्य्यिपप	पपर्ल्लियपप	पपर्स्दिपप
पपर्द्विपप	पपर्भिपप	पपर्प्टीपप	पपर्प्लिपप	पपर्ग्रिपप	पपर्ल्ह्यिपप	पपर्स्निपप
पपर्द्ध्यिपप	पपर्मिपप	पपर्खिपप	पपर्फ्शिपप	पपर्लिपप	पपल्क्यिपप	पपर्स्पिपप
पपर्द्व्रिपप	पपर्न्यिपप	पपर्व्हिपप	पपर्भ्निपप	पपर्व्यिपप	पपर्स्थिपप	पपर्स्फिपप
पपर्द्ऱ्यिपप	पपर्त्रिपप	पपर्णिपप	पपर्भ्यिपप	पपर्व्रिपप	पपर्ल्ड्रिपप	पपर्स्बिपप
पपर्ध्किपप	पपर्लिपप	पपर्प्तिपप	पपर्भ्रिपप	पपर्लिपप	पपर्श्किपप	पपर्स्मिपप
पपर्ध्यिपप	पपर्न्विपप	पपर्थिपप	पपर्भ्लिपप	पपर्सिपप	पपर्श्खिपप	पपर्स्यिपप
पपर्ध्निपप	पपर्सिपप	पपर्प्हिपप	पपर्भ्विपप	पपर्व्हिपप	पपर्श्चिपप	पपर्स्रिपप
पपर्ध्यिपप	पपर्न्हिपप	पपर्ष्यिपप	पपर्भ्यिपप	पपर्ल्किपप	पपर्श्छिपप	पपर्स्लिपप
पपर्ध्रिपप	पपर्स्थिपप	पपर्जिपप	पपर्म्तिपप	पपर्ल्खिपप	पपर्श्टिपप	पपर्स्विपप
पपर्ध्त्रिपप	पपन्भिर्वपप	पपर्प्पिपप	पपर्म्दिपप	पपर्लिपप	पपर्श्तिपप	पपर्स्सिपप
पपर्ध्विपप	पपर्म्यिपप	पपर्प्भिपप	पपर्म्निपप	पपर्ल्चिपप	पपर्श्निपप	पपस्म्यिपप
पपर्ध्सिपप	पपन्स्टिपप	पपर्मिपप	पपर्म्पिपप	पपर्ल्जिपप	पपर्श्बिपप	पपर्स्क्रिपप
पपर्न्किपप	पपन्स्यिपप	पपर्प्यिपप	पपर्म्बिपप	पपर्ल्टिपप	पपर्श्मिपप	पपस्त्र्यपप
पपर्न्खिपप	पपर्ह्यिपप	पपर्प्रिपप	पपर्मिपप	पपर्ल्ठिपप	पपर्श्यिपप	पपस्थ्यिपप
पपर्न्चिपप	पपन्ज्यिपप	पपर्लिपप	पपर्म्मिपप	पपर्ल्डिपप	पपर्श्रिपप	पपस्म्यिपप
पपर्न्छिपप	पपन्क्सिपप	पपर्चिपप	पपर्म्यिपप	पपर्ल्हिपप	पपर्श्लिपप	पपस्त्विपप
पपर्न्जिपप	पपन्त्र्यपप	पपर्ष्मिपप	पपर्म्रिपप	पपर्लिपप	पपर्श्विपप	पपर्स्प्रिपप
पपर्स्झिपप	पपन्त्सिपप	पपर्प्सिपप	पपर्म्लिपप	पपर्ल्थिपप	पपश्शिपप	पपस्र्यिपप
पपर्न्टिपप	पपर्स्थिपप	पपर्ळिपप	पपर्म्विपप	पपर्व्हिपप	पपर्श्चिपप	पपर्ह्लिपप
पपर्न्ठिपप	पपन्थ्विपप	पपर्प्यिपप	पपर्म्शिपप	पपर्ल्पिपप	पपर्स्किपप	पपर्स्तिपप
पपर्न्डिपप	पपर्न्द्रिपप	पपर्फ्किपप	पपर्म्सिपप	पपर्ल्फिपप	पपर्स्खिपप	पपर्ह्यिपप
पपर्न्हिपप	पपर्न्ह्रिपप	पपर्फ्जिपप	पपर्म्हिपप	पपर्ल्बिपप	पपर्स्छिपप	पपर्ह्मिपप

Half-to-base kerns

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्डपपक्चप पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप पक्टपपक्णपपक्तपपक्थपपक्दपपक्धपपक्नप पक्नपपक्पपपक्फपपक्बपपक्भपपक्मपपक्यप पक्रपपक्रपपक्लपपक्ळपपक्वप पक्शपपक्षपपक्सपपक्हपपक्कपपक्खपपक्गप पक्जपपक्डपपक्टपपक्कपपक्यपप

पपक्कपपख्खपपखापपख्यपपख्डपपख्यप पख्छपपख्जपपख्झपपख्जपपख्टपपख्ठपपख्डप पद्धपपख्णपपख्जपपख्यपपख्यपपख्यप पद्भपपख्यपपख्कपपख्यपप्क्षपपख्यप पद्भपपद्भपपख्लपपख्कपपख्लपपख्यप पख्अपपख्सपपख्हपपक्कपपख्लपपखापपद्जप पद्धपपद्भपपक्कपपख्यपप

पपग्कपपग्खपपग्गपपग्घपपग्ङपपग्चप पग्छपपग्जपपग्झपपग्ञपपग्टपपग्ठपपग्डप पग्डपपग्णपपग्तपपग्थपपग्दपपग्धपपग्नप पग्नपपग्पपग्कपपग्ळपपग्वपपग्भपपग्मपपग्यपपग्रप पग्सपपग्हपपग्कपपग्खपपग्गपपग्जपपग्डप पग्हपपग्कपपग्यपप पग्हपपग्कपपग्यपप

पपष्कपपष्खपपघापपष्यपपष्ठपपष्वप पष्ठपपष्कपपष्ठपपष्ठपपष्ठप पष्ठपपघ्णपपष्तपपष्ठपपष्ठपपष्ठप पष्नपपघ्मपपघ्मपपष्वपपश्रपपघ्मपप्यप पप्रपपष्रपपष्मपपष्ठपपष्ठपपष्वप पष्ठापपष्ठपपष्मपपष्ट्रपपष्कपपष्वप पष्ठापपष्ठपपष्ठपपष्कपपष्ठपप पपच्कपपच्खपपच्यपपच्छपपच्छप पच्छपपच्जपपच्झपपच्जपपच्टपपच्छपपच्छप पच्डपपच्णपपच्तपपच्थपपच्दपपच्धपपच्नप पच्नपपच्यपपच्कपपच्खपपच्यप पच्चपपच्यपप्क्षपपच्छपपच्यपपच्थप पच्यपपच्सपपच्हपपच्कपपच्छपपच्यपप्रज्ञप पच्डपपच्हपपच्कपपच्यपप

पपछकपपछखपपछगपपछघपपछङपपछचप पछछपपछजपपछझपपछञपपछटप पछडपपछढपपछणपपछतपपछथपपछदप पछधपपछनपपछनपपछपपपछफपपछबप पछभपपछमपपछ्यपपछूपपछ्रपपछलप पछळपपछळपपछखपपछशपपछषपपछसप पछहपपछकपपछखपपछगपपछजपपछड़प पछढपपछकपपछखपप

पपज्कपपज्खपपज्गपपज्घपपज्ङपपज्चप पज्छपपज्जपपज्झपपज्ञपपज्टपपज्ठपपज्डप पज्ढपपज्णपपज्तपपञ्थपपज्दपपज्धपपज्नप पज्नपपज्पपपज्कपपज्बपपज्भपपज्यप पज्जपपज्सपपज्लपपज्ळपपज्जपपज्शप पज्षपपज्सपपज्हपपज्कपपज्खपपज्ञप पज्डपपज्हपपज्कपपज्यपप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइहप पइढपपइग्गपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप पइनपपइमपपइफपपइबपपइभपपइमपपइयप पझपपइसपपइलपपइळपपइळपपदवपपइशप पइषपपइसपपइहपपइकपपइखपपइग्गपपइजप पइहपपइढपपइफ़पपइयप पपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्चपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्जपपञ्चप पञ्चपपञ्गपपञ्कपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्मपपञ्कपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्सपपञ्चपपञ्कपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्सपपञ्चपपञ्कपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्कपपञ्चपप

पपट्कपपट्खपपट्गपपट्घपपट्ङपपट्चप पट्छपपट्जपपट्झपपट्ञपपट्टप पट्ढपपट्णपपट्तपपट्थपपट्दपपट्घपपट्नप पट्नपपट्पपपट्फपपट्बपपट्भपपट्मपपट्चप पट्नपपट्पपट्कपपट्ळपपट्भपपट्शप पट्रपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गप पट्षपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप पट्डपपट्ढपपट्फपपट्यपप

पपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्घपपठ्ङपपठ्चप पठ्छपपठ्जपपठ्झपपठ्ञपपठ्टपपठ्ठप पठ्ढपपठ्णपपठ्तपपठ्थपपठ्दपपठ्घपपठ्नप पठ्नपपठ्पपपठ्फपपठ्बपपठ्भपपठ्मपपठ्यप पठ्मपठ्रपपठ्लपपठ्ळपपठ्खपपठ्मपपठ्यप पठ्षपपठ्सपपठ्हपपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्जप पठ्डपपठ्डपपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्जप

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्डपपड्चप पड्छपपड्जपपड्झपपड्ञपपड्टपपड्ठपपड्डप पड्डपपड्णपपड्तपपड्थपपड्दपपड्घपपड्नप पड्नपपड्पपपड्फपपड्बपपड्भपपड्मपपड्यप पड्नपपड्रपपड्लपपड्ळपपड्ळपपड्वपपड्शप पड्षपपड्सपपड्हपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप पड्डपपड्लपपड्फपपड्यपप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्ङपपढ्चप पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्ञपपढ्टपपढ्ठपपढ्डप पढ्ढपपढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप पढ्नपपढ्णपपढ्कपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्यप पढ्नपपढ्रपपढ्कपपढ्ळपपढ्मपढ्शप पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्जप पढ्डपपढ्सपपढ्हपपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्जप पढ्डपपढुढ्पपढुफ़पपढ्यपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्डपपण्चप पण्छपपण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्ठप पण्टपपण्णपपण्कपपण्खपपण्भपपण्मपपण्यप पण्नपपण्पपण्कपपण्ळपपण्ळपपण्वपण्शप पण्पपण्रपण्लपपण्ळपपण्ळपपण्जप पण्डपपण्कपपण्कपपण्खपपण्जप पण्डपपण्डपपण्कपपण्यपप

पपत्कपपत्खपपतापपत्यपपत्ङपपत्चपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्वपपत्गप पत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नपपत्पपत्भप पत्बपपत्भपपत्मपपत्यपपत्रपपत्रपपत्लपपत्कप पत्कपपत्वपपत्शपपत्सपपत्सपपत्हपपत्कपपत्खप पतापपत्जपपत्डपपत्कपपत्सपपत्यपप

पपद्कपपद्खपपद्गपपद्घपपद्चप पद्छपपद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठप पद्डपपद्ढपपद्णपपद्तपपद्थपपद्दप पद्नपपद्नपपद्पपपद्फपपद्वपपद्भप पद्नपपद्नपपद्पपपद्कपपद्छपपद्वप पद्शपपद्षपपद्सपपद्हपपद्कपपद्खप पद्शपपद्जपपद्झपपद्कपपद्खप पद्शपपद्जपपद्झपपद्कपपद्खप

पपध्कपपध्खपपध्गपपध्यपपध्नपप्चप पध्छपपध्जपपध्झपपध्जपपध्टपपध्ठपपध्डप पध्नपपध्मपपध्मपपध्यपपध्यपपध्मपपध्यप पध्नपपध्मपपध्मपपध्वपपध्मपपध्यप पध्मपपध्मपपध्नपपध्कपपध्वपपध्मप पष्मपपध्सपपध्हपपध्कपपध्वपपध्मप पध्नपपध्यपध्कपपध्यप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्धपपन्ङपपन्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्दप पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्धपपन्नपपन्नपपन्प पन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपपन्नपपन्तप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्सपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपन्गपपन्जपपन्डपपन्द्रपपन्कप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्घपपन्छपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्ढप पन्गपपन्तपपन्थपपन्दपपन्धपपन्नपपन्नपपन्य पपन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपप्चपपन्तपपन्तप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्सपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपन्नापपन्जपपन्डपपन्छपपन्सपपन्यप पपप्कपपप्खपपपापपघ्यपपप्कपपघ्यपप्छप पप्जपपप्झपपप्जपपप्टपपप्ठपपप्डपपप्कप पप्तपपध्यपपप्दपपध्यपप्नपप्नपप्पपप्कप पप्कपपप्कपपप्यपपप्रपपप्रपप्कपपप्कप पप्जपपप्कपपप्कपपप्कपपप्सपपप्कप पपापप्जपपप्डपपप्कपप्कपपप्यपप

पपफ्कपपफ्खपपफ्गपपफ्घपपफ्डपपफ्चप पफ्छपपफ्जपपफ्झपपफ्ञपपफ्टपपफ्ठपपफ्डप पफ्डपपफ्णपपफ्तपपफ्थपपफ्दपपफ्धपपफ्नप पफ्नपपफ्पपपफ्फपपफ्बपपफ्भपपफ्मपपफ्यप पफ्रपपफ्रपपफ्लपपफ्ळपपफ्जपपफ्नपपफ्शप पफ्षपपफ्सपपफ्हपपफ्कपपफ्खपपफापफ्जप पफ्डपपफ्डपपफ्फपपफ्यपप

पपक्कपपब्खपपब्गपपब्धपपब्हपपब्हपपब्छप पब्जपपब्झपपब्जपपब्टपपब्छपपब्हपपब्सपप्याप पब्जपपब्भपपब्सपपब्सपपब्रपपब्सपपब्कप पब्जपपब्सपपब्सपपब्सपपब्सपपब्हपपब्कपपब्खप पब्जपपब्जपपब्हपपब्सपपब्सपप

पभ्कपपभ्खपपभापपभ्छपपभ्छपपभ्छपपभ्छप पभ्जपपभ्कपपभ्कपपभ्छपपभ्छपपभ्छपपभ्छप पभ्जपपभ्कपपभ्कपपभ्छपपभ्छपपभ्छपपभ्छप पभ्जपपभ्कपपभ्कपपभ्छपपभ्छपपभ्छपपभ्छप पभ्जपपभ्कपपभ्कपपभ्छपपभ्छपपभ्छपपभ्छप पभ्कपपभ्कपपभ्कपपभ्छपपभ्छपपभ्छप

पपम्कपपम्खपपम्गपपम्घपपम्डपपम्घपपम्छप पम्जपपम्झपपम्ञपपम्दपपम्घपपम्डपपम्नपपम्प पम्भपपम्बपपम्भपपम्मपपम्यपपम्रपपम्लप पम्कपपम्ळपपम्वपपम्शपपम्शपपम्सपपम्हप पम्कपपम्खपपमापपम्जपपम्झपपम्हपपम्भप पम्यपप

पपय्कपपय्खपपयगपपय्घपपय्हपपय्घपपय्छप पय्जपपय्झपपय्जपपय्दपपय्छपपय्हपपय्वप पय्जपपय्कपपय्भपपय्मपपय्यपप्रपपय्नपप्यप पय्कपपय्कपपय्वपपयभपप्यपप्यपप्रपपय्नप पय्कपपय्कपपय्वपपयभपप्यपपय्नपप्रहप पय्कपपय्खपपयगपय्जपपय्हपपय्कप प्रयाप

पपर्कपपर्खपपर्गपपर्घपपर्ङपपर्चपपर्छपपर्जप पर्झपपर्ञपपर्टपपर्ठपपर्डपपर्वपपर्णपपर्तपपर्थप पर्दपपर्धपपर्नपपर्नपपर्पपपर्फपपर्बपपर्भपपर्मप पर्यपपर्रपपर्रपपर्लपपर्ळपपर्ळपपर्वपपर्शप पर्षपपर्सपपर्हपप्रक्रपपर्खपपर्गपपर्जपपर्डपपर्ढप पर्फपपर्यपप

पपन्कपपन्खपपन्गपपञ्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्अपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्थप पन्तपपञ्चपपन्दपपञ्चपपन्नपपन्मप पन्बपपञ्चपपन्भपपन्यपप्रूपपन्नपपन्लप पन्कपपन्वपपश्चपपञ्चप पन्नपपन्जपपन्डपपन्कपपन्यपप पपल्कपपल्खपपल्गपपल्घपपल्ङपपल्चपपल्छप पल्जपपल्झपपल्ञपपल्टपपल्डपपल्डप पल्णपपल्तपपल्थपपल्दपपल्धपपल्नप पल्पपपल्फपपल्बपपल्भपपल्मपपल्यपपल्लप पल्पपपल्कपपल्खपपल्थपपल्थपपल्थप पल्सपपल्हपपल्कपपल्खपपल्गपपल्जपपल्डप पल्सपपल्हपपल्कपपल्खपपल्गपपल्जपपल्डप पल्डपपल्फपपल्यपप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळनपपळपपपळभपपळबप पळभपपळमपपळयपपळूपपळऱपपळलपपळळप पळळपपळवपपळशपपळषपपळसपपळहप पळकपपळखपपळग्रापपळजपपळइप पळकपपळखपपळग्रपप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळनपपळपपळअपपळखप पळभपपळमपपळयपपळ्पपळअपपळलप पळळपपळकपपळवपपळशपपळषप पळहपपळकपपळखपपळगपळजपपळडप पळढपपळकपपळखपप

पपळ्कपपळ्वपपञापपळ्चपपळ्डपपळ्पपळ्प पञ्जपपळ्झपपञ्जपपञ्चपपञ्चपपळ्पपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्मप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपप पपश्कपपश्खपपश्गपपश्चपपश्डपपश्चपपश्चप पश्जपपश्झपपश्ञपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्ढप पश्णपपश्तपपश्थपपश्दपपश्चपपश्चप पश्पपपश्कपपश्चपपश्मपपश्चपपश्चप पश्रपपश्लपपश्कपपश्चपपश्चप पश्सपपश्हपपश्कपपश्खपपश्गपपश्जपपश्डप पश्टपपश्कपपश्यपप

पपष्कपपष्खपपषापपष्घपपष्डपपष्चपपष्छप पष्जपपष्झपपष्जपपष्टपपष्ठपपप्लपपष्कप पष्जपपष्ट्रपपष्ठापपष्मपपष्नपपष्नपपष्कप पष्ळपपष्वपपष्शपपष्यपपष्ठपपष्लपपष्कप पष्ळपपष्वपपष्रापपष्ठपपष्कपपष्कप पष्छपपष्वपपष्ठापपष्ठपपष्कपपष्कप

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्घपपस्ङपपस्चप पस्छपपस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डप पस्डपपस्णपपस्तपपस्थपपस्दपपस्धपपस्नप पस्नपपस्पपपस्फपपस्बपपस्भपपस्मपपस्यप पस्नपपस्तपपस्लपपस्ळपपस्ळपपस्वपपस्शप पस्षपपस्सपपस्हपपस्कपपस्खपपस्गपपस्जप पस्डपपस्डपपस्कपपस्यपप

पपह्कपपह्खपपद्मापपह्घपपह्डपपह्चपपह्छप पहजपपह्झपपह्ञपपहटपपह्ठपपह्डपपह्डप पह्णपप्टतपपद्थपपट्दपपट्घपपह्लपपट्मप पट्मपपट्खपपट्भपपद्मपपद्यपपह्मपपट्सपपह्मप पट्कपपट्खपपद्मपपट्शपपट्सपपट्सप पट्कपपट्खपपट्मापपट्जपपट्डपपट्डप पट्कपपट्खपपट्मापपट्जपपट्डपपट्डप पट्सपपट्यपप

less common half-forms

पपक्ष्कपपक्ष्खपपक्ष्मपपक्ष्यपपक्ष्यपक्ष्यप पक्ष्णपक्ष्जपपक्ष्मपपक्ष्यपक्ष्यपक्ष्यपक्ष्यपक्ष्यप पक्ष्यपपक्ष्मपपक्ष्यपक्ष्यपक्ष्यपक्ष्मपप पक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्यपक्ष्मपप पपक्ष्यपपक्ष्मप पक्ष्यपक्ष्मपवपपक्ष्यपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मप

पपइक्तपपइखपपइगपपइचपपइङपपइचप पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप पइढपपइणपपइत्तपपइथपपइदपपइधपपइनपपइपप पइफपपइबपपइभपपइमपप पपइयपपइलपपइळप पइपपवपपइशपप पपइषपपइसपपइहपप

पपरक्रपपरख्रपपरग्रापपरग्रपपरङ्गपपर्ख्यपपरछप परज्ञपपरझपपरञ्जपपरटपपरठपपरडपपरद्वप परग्रपपरत्नपपरभपपरद्मपपरभपपरज्ञप परम्भपपरब्रपपरभपपरमपप पपर्यपपरलप परळपपरमपवपपरशपप पपरश्रपपरसपपरहपप

पपश्कपपश्खपपश्चापपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्जपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्जपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्कपपश्चपपश्चपपश्चपप पश्चपपश्चपपश्चपपश्चपप पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रङपपक्रचप पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रटप पक्रडपपक्रटपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप पक्रधपपक्रनपपक्रपपपक्रफपपक्रबपपक्रभपपक्रमप पपक्रयपपक्रलपपक्रळपपक्रपपवपपक्रशप पपक्रथपपक्रसपपक्रहपप

पपर्कपपरुखपपरुगपपरुघपपरुङपपरुचप परुछपपरुजपपरुझपपरुञपपरुटपपरुठप परुडपपरुटपपरुणपपरुतपपरुथपपरुदपपरुधप परुनपपरुपपपरुफपपरुबपपरुभपपरुमप परुयपपरुलपपरुळपपरुपवपपरुशप परुषपपरुसपपरुहपप

पपःक्रपपःखपपःग्रापपःश्चपपःखपपःश्चपपःश्चप पःजपपःखपपःश्चपपःटपपःश्चपपःखप पःगपपःजपपःश्चपपःद्वपपःश्चपपःजपपःग्रप पःग्रपपःखपपःश्मपपःग्रपपः पपःश्चपपःजपपःखप पःग्रपवपपःशपप पपःश्मपपःसपपः

पपप्रक्रपपप्रखपपप्रगपपप्रयपप्रस्थपप्रस्थप पद्रजपपप्रसपपप्रभपपप्रदपपप्रसपप्रसपप्रसप पप्रणपपप्रतपपप्रभपपप्रसपपप्रमप पप्रक्रपपप्रसपप्रभपपप्रमपप पपप्रयपपप्रसपप्रसप पप्रमपवपप्रशपप पपप्रसपपप्रसपप

पपज्रमपज्रखपपज्रापपज्रयपपज्रसपपज्रयपपज्रथप पज्रापपज्रसपपज्रभपपज्रसपपज्रपपज्रमप पज्रापपज्रापपज्रभपपज्रसपपज्रमप पज्रमपपज्रापपज्रभपपज्रमपपज्रमप पज्रअपपज्रमपवर्मप्रशापपज्रसपपज्रसपप

पपइक्रपपइख्रपपइग्रापपइघ्यपपइह्रपपइव्यप पइछ्रपपइज्जपपइह्मपपइञ्जपपइट्रपपइठपपइहरप पइद्रपपइग्गपपइतपपइश्रपपइद्रपपइध्रपपइनप पइग्रपपइक्रपपइश्रपपइभ्रपप पपइयप पइत्रपपइळ्रपपइग्रपवपपइश्रापपइश्रपपइसप पइह्रपप

पपञ्कपपञ्खपपञ्जापपञ्चपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्जपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्जापपञ्जपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्जपपञ्जपपञ्चप पञ्चपप

पपण्कपपण्खपपण्रापपण्रापपण्डपपण्डपपण्छप पण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्ठपपण्डपपण्डप पण्णापपण्जपपण्शपपण्दपपण्धपपण्जपपण्णप पण्फपपण्जपपण्भपपण्मपप पपण्यपपण्जप पण्ळपपण्रपवपपण्शपप पपण्णपपण्सपपण्डपप

पपःकपपःखपपःगपपश्चपपःखपपःखपपः पञ्जपपःझपपञ्जपपःद्यपग्छपपःखपपःखपपः पञ्जपपश्चपपञ्चपपश्चपपःशपपःश्मपपश्चप पश्चपपःश्मपपः पपःश्चपपञ्जपपःश्चप पश्चपपःश्मपपःश्चपपः

पप्रक्रपप्रख्यपप्रगपप्रघपप्रस्पप्रचपप्रखप प्रजपप्रसपप्रञपप्रटपप्रठपप्रसप्रदप प्रणपप्रतपप्रथपप्रदपप्रधपप्रनपप्रपप प्रक्रपप्रखपप्रभपप्रमपप पप्रयपप्रलप प्रक्रपप्रमप्रवपप्रशपप पप्रथपप्रसप्परहपप

पप्रक्रपप्रख्यपप्रगपप्रघपप्रख्यपप्रख्यपप्रख्य प्रज्ञपप्रद्धापप्रज्ञपप्रद्धपप्रद्धप प्रज्ञपप्रद्भपप्रथ्यपप्रद्भपप्रध्मपप्रमप प्रक्रपप्रखपप्रभपप्रमपप पप्रयपप्रलप प्रद्धपप्रमप्रयपप्रशपप पप्रथमप्रसप्रदूपप

पपन्क्रपपन्छपपन्गपपन्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्द्रपपन्ठपपन्डपपन्द्रप पन्गपपन्नपपन्थपपन्द्रपपन्चपपन्नपपन्मप पन्त्रपपन्भपपन्मपप पपन्यपपन्नपपन्कपपन्मप वपपन्नापप पपन्मपपन्नपप

पप्रक्रपप्रखपप्रापप्रयप्रह्रपप्रचपप्रछप प्रजपप्रह्मपप्रञपप्रटपप्रछपप्रह्रपप्रणप प्रतपप्रथपप्रद्रपप्रधपप्रनपप्रपप्रपप्रमपप्रक्षप प्रभपप्रमपप पप्रयपप्रलपप्रखपप्रप्रपवप प्रशपप पप्रमपप्रसपप्रह्रपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगपपप्रचपपप्रखपपप्रखप पप्रखपपप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रदपपप्रखप पप्रडपपप्रखपपप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रधप पप्रनपपप्रपपपप्रकपपप्रखपपप्रभपपप्रमपप पपप्रयपपप्रलपपप्रखपपप्रभपवपपप्रशपप पपप्रखपपप्रसपपप्रहपप

पपक्रमपर्श्वपपत्रापपत्र्यपपत्र्यपपत्र्यपपत्र्यपपत्र्यपपत्र्यपप्रत्यपपत्रयप